'नये मीडिया' पर हिंदी साहित्य और साहित्यकार अमृतलाल नागर

नवीन चंद्र जोशी,
ब्यूरो प्रभारी, राष्ट्रीय सहारा एवं शोध छात्र,
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
डीएसबी परिसर, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल।
मो. 9412037779, 8077566792।

सूचना प्रौद्योगिकी के प्रादुर्भाव के साथ पठनीयता में आ रही कमी की चिंताओं के बीच बदलते दौर में कागज–पेन व पुस्तकों की सीमाओं में बंधा 'परंपरागत मीडिया', की–बोर्ड व माउस के जरिये कम्प्यूटर पर उतरकर, तथा इंटरनेट के पंख लगाकर कागज रहित 'नये मीडिया' पर पूरी दुनिया की पहुंच में आकर विस्तार पा रहा है। देश–दुनिया में कागज पर छपी पुस्तकों की सामग्री नये मीडिया के पंख लगाकर परंपरागत **'कागज से कागज रहित' नये मीडिया की वर्चुअल–अदृश्य 'ई दुनिया'** में आती और सर्वसुलभ होती जा रही है। यह उक्ति भी सही साबित हो रही है कि वेब पर छपी खबरों के पंख लगे होते है, यानी कि उनका दायरा असीमित होता है। भारत और भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी, तथा उसका सामान्यतया क्लिष्ट व धीर–गंभीर माना जाने वाला हिंदी साहित्य और इसके साहित्यकार भी इस दौड़ में पीछे नहीं रहे हैं। स्थिति यह हो गयी है कि देश में इस नये मीडिया की धुरी इंटरनेट के बीती बीसवीं सदी के आखिरी दशक में 1994–1995 में आने के करीब डेढ़–दो दशक बाद ही देश में सैकड़ों नहीं हजारों की संख्या में हिंदी और लाखों की संख्या में भारतीय भाषाओं में नये मीडिया के वेबसाइटें, ब्लॉग, न्यूज पोर्टल, वेब पोर्टल आदि स्वरूप मौजूद हैं। देश इस वर्ष राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत पं. दीन दयाल उपाध्याय, गुरु गोविंद सिंह, एम सुब्बालक्ष्मी सहित देश की 10 विभूतियों के साथ जिन एकमात्र साहित्यकार अमृतलाल नागर (1916–1990) की जन्म शताब्दी मना रहा है, वे भी इंटरनेट के आने से पूर्व ही दुनिया से प्रस्थान करने के बावजूद मुद्रित पुस्तकों से उतरकर नये मीडिया माध्यमों पर छा गये हैं।

मीडिया की विकास यात्राः

'न्यू या नया मीडिया' निरंतर अपनी प्रकृति बदलने वाला एक माध्यम है। ईसा से करीब तीन लाख वर्ष पूर्व रामापिथेकस युग (Ramapithecus age) में गुफाओं में रहने वाले हमारे प्राग ऐतिहासिक कालीन पूर्वजों में मस्तिष्क एवं केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (Central Nervous System) धीरे–धीरे विकसित होना प्रारंभ हुआ, और इसी के साथ उनकी बाद की पीढ़ियों में संचार के मूलभूत तत्व के रूप में देखने, सुनने, छूने, सूंघने एवं चखने की क्षमता युक्त ज्ञानेन्द्रियों का विकास हुआ, जिससे वे अपने खतरे में होने या सुरक्षित होने तथा किसी से प्रेम अथवा घृणा करने तथा किन्ही स्थितियों के अनूकूल अथवा प्रतिकूल होने का पता लगाने की **'संचार की प्राथमिक व मूलभूत आवश्यकताओं'** की पूर्ति कर पाये थे। इसके बाद ही मानव का स्वयं से संचार प्रारंभ हुआ था। इन इंद्रियों के विकसित होने के बाद ही मानव में कुछ समझ विकसित हुई और उसने स्वयं के लिये सुरक्षित ठिकानों–गुफाओं का सहारा लिया होगा। इस तरह से उस दौर के मानव को 'स्वयं से साक्षात्कार के लिये' पहला मीडिया यानी माध्यम मिला था। जो एक तरह से उस दौर के लिहाज से मानव को संचार के लिये प्राप्त हुआ एक **'नया मीडिया'** ही था।

आगे करीब 50 हजार वर्ष पूर्व न्यमोनिक चरण (Mnemonic Stage), जबकि भाषाओं का जन्म नहीं हुआ था, मनुष्य में याददास्त की क्षमता जुड़ी, और इसके साथ मानव में 'सामाजिक संचार' प्रारंभ हुआ। यह भी उस दौर के लिये उस दौर के मानव के लिये एक नया मीडिया ही था। वहीं ईसा से करीब सात हजार वर्ष पूर्व मध्य पाषाणकालीन दौर में मानव में चित्र बनाने (Pictographics) की नयी योग्यता जुड़ी, जिसके साथ उसमें रचनात्मकता व कल्पनाशीलता का विकास भी हुआ। इसके बाद मानव गुफाओं में चित्र बनाकर अपनी भावनायें

प्रदर्शित करने लगे। इस दौर के बनाये गुफा–शैलचित्र आज भी उत्तराखंड के लखुडियार व मध्य प्रदेश के भीमबेटका स्थित शैलाश्रयों सहित अनेक स्थानों पर मिलते हैं। आगे ईशा से तीन से दो हजार वर्ष पूर्व के दौर में शैलचित्र बनाने की मानव की विधा बेहतर हुयी और सर्वप्रथम भावनाओं के लिये छोटे 'प्रतीकों', जैसे मनुष्य के लिय 'λ', घर के लिये '9', बैल के लिये '∀', दरवाजों के लिये 'Δ', ऊंट के लिये '7' आदि चिन्हों का प्रयोग किया जाता था। आगे फोनेटिक काल में 'क' के लिये '४', 'न' के लिये '⊥' आदि चिन्हों का प्रयोग किया जाने लगा।[1] और इसके साथ ही मानव सभ्यता के विकास के साथ मानव में 'अंतरवैयक्तिक संचार' बढ़ने लगा। लोग एक–दूसरे से आमने–सामने बात करने में सक्षम हो गये, और शनैः शनैः वे दूर तक अपनी बात पहुंचाने के उपाय भी ढूंढने लगे। दूर संदेश भेजने के लिए संदेशवाहकों (Relay Runners) का प्रयोग किया जाने लगा जो आज के दौर के डाक विभाग के हरकारों की तरह एक से दूसरे स्थान पर संदेशों को ले जाते थे। इस तरीके से कई बार संदेश पहुंचाने में दिनों–महीनों का समय लग जाता था। इसके साथ ही मानव संदेशों को दूर तक पहुंचाने के लिये लिपिबद्ध करने की ओर आगे बढ़ने लगा। हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की खुदाई में मानव की लेखन कला के सबूत मिले, जिन्हें आज से 5000 वर्ष पुराना यानी ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व का बताया जाता है। इस प्रकार मीडिया लगातार नया होता चला गया।

आधुनिक दौर का मीडिया :

पांचवीं शताब्दी ईसवी पूर्व तक रोम में संवाद लेखकों द्वारा हाथ से लिखे संदेशों–खबरों को आगे पहुंचाने का जिक्र मिलता है। ईसा से 131 से 59 वर्ष पूर्व रोम के सम्राट जूलियस सीजर ने 'Acta Diurna' (एक्टा डाइएर्ना–यानी दिन की घटनाएं) नाम की धातु की पट्टियों पर दिन की घटनाओं को उकेर कर आज के दैनिक समाचार पत्र निकालने की पृष्ठभूमि तैयार की। उधर चीन में ईसा से 100 वर्ष पूर्व कागज का निर्माण हुआ। 400 ईसवी सन में भारत ने भी कागज बनाना सीख लिया था। 11वीं सदी में चीन में पत्थर के टाइप बने, ताकि अधिक प्रतियां छापी जा सकें। 13वी–14वीं सदी में चीन ने अलग–अलग संकेत चिह्न भी विकसित कर लिये। इसके बाद धातु के टाइप बनाने की कोशिश हुई, क्योंकि पत्थर के टाइप अधिक मजबूत नहीं थे। 1409 ईसवी में कोरिया में धातु के टाइपों से पहली पुस्तक छापे जाने की बात कही जाती है, लेकिन प्रमाणिक तौर पर 1439 में जर्मनी के सुनार योहानेस गुटेनबर्ग ने धातु के लगाये–हटाये जाने युक्त (Movable) ठप्पों से अक्षरों को छापने की मशीन का आविष्कार किया।[2] इस तरह मीडिया निरंतर अपना स्वरूप बदलता चला गया। आगे 1876 में टेलीफोन, 1907 में रेडियो और 1927 में टेलीविजन नये मीडिया के नये अंग बनकर आये।

लगातार स्वरूप बदलता है नया मीडिया :

बहुत अधिक दिन नहीं हुए हैं जब पत्रकारिता के विद्यार्थी न्यू मीडिया के रूप में टेलीविजन और रेडियो के बारे में पढ़ा करते थे। किंतु तकनीक में हुई उन्नति के साथ न्यू मीडिया का स्वरूप भी बदलता चला गया और आज हम न्यू मीडिया के रूप में वह सभी चीजें देखते हैं जो कि डिजिटल रूप में हमारे आस–पास मौजूद हैं। 'प्रिंट मीडिया' और 'ब्रॉडकास्ट मीडिया' यानी कागज पर प्रकाशन व टीवी–रेडियो पर प्रसारण के बाद अब जमाना **'इंटरनेट आधारित कागज रहित नये मीडिया'** का है, जिसे वेब मीडिया, साइबर मीडिया, इंटरनेट मीडिया और पेपरलेस मीडिया जैसे कमोबेश समानार्थी शब्दों से पुकारा जा रहा है। सोशल मीडिया भी इसी का एक अंग है। जवानी की ओर बढ़ रहे इस नये दौर के मीडिया का नयी पीढ़ी के बच्चों, युवाओं और नौजवानों में जबर्दस्त आकर्षण है। साथ ही इसने सभी वर्गों को अपनी ओर खींचा है।

बीसवीं सदी में कंप्यूटर के विकास के साथ एक नए डिजिटल माध्यम 'वेब मीडिया' का जन्म अमेरिका में 29 अक्तूबर 1989 को 'अर्पानेट' के नाम से हुआ था। भारत में इसका आरंभ 1994 में हुआ, और 15 अगस्त 1995 को इसे व्यावसायिक रूप दिया गया। वहीं वेबसाइटों पर निःशुल्क रूप में निजी अभिव्यक्ति का आरंभ

---

[1] अग्रवाल–2002, हैंडबुक ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन, कान्सेप्ट पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2002, पेज 5–6

[2] नवीन समाचार, समाचार पोर्टल @ https://navinsamachar.wordpress.com/history-of-journalism/new-media/ देखा गया 1 मार्च 2016।

1994 में जियोसिटीज डॉट कॉम (geocities.com) के द्वारा हुआ। जबकि भारत में पहला अंग्रेजी ब्लॉग 1997 में आया, और हिन्दी में ब्लॉगिंग की शुरुआत आलोक कुमार द्वारा 2 मार्च 2003 को हुई।

शुरूआती दौर में डाटा के आदान–प्रदान के लिए शुरू की गई कंप्यूटर आधारित सीमित व सुविधाजनक इंटरनेट सेवा ने आज विश्वव्यापी रूप अख्तियार कर लिया है। यहां अभिव्यक्ति की आजादी है। यहां हर कोई अपनी बात निर्बाध तरीके से 'मास' यानी बड़े समूह तक पहुंचा सकता है। यह वेब मीडिया ही 'न्यू मीडिया' है। यहां तत्काल अभिव्यक्ति संभव है, साथ ही एक शीर्षक अथवा विषय पर उपलब्ध सभी अभिव्यक्तियों की एक साथ जानकारी प्राप्त करना साथ ही किसी अभिव्यक्ति पर तत्काल फीडबैक यानी प्रतिक्रिया देना और उस अभिव्यक्ति पर प्राप्त सभी प्रतिक्रियाओं को एक जगह साथ–साथ देख पाना भी संभव है। यह 'दो तरफा संवाद' इस नये मीडिया की प्रमुख एवं सबसे बड़ी विशेषता व ताकत है। पूर्णतः तकनीक पर आधारित होने के कारण इस क्षेत्र में प्रतिदिन कुछ ना कुछ नया जुड़ता ही जा रहा है।[3]

परिभाषा के लिहाज से देखें तो 'न्यू या नये मीडिया' में मौजूदा दौर की प्रिंट पत्रकारिता के लिखे शब्दों, चित्रों तथा ग्राफीय आलेखन, ऑडियो पत्रकारिता यानी रेडियो के स्वरों – 'ऑडियो बाइट', टीवी पत्रकारिता के ऑडियो–वीडियो यानी स्वर युक्त दृश्यमान 'ऑडियो–वीडियो बाइट' तथा सिनेमा, टीवी और लैपटॉप–डेस्कटॉप कम्प्यूटरों के बाद चौथी पीढ़ी के मोबाइल–स्मार्टफोन की **'चौथी स्क्रीन'** पर दिखने वाले इन सभी स्वरूपों का समन्वित व समग्र रूप भी समाहित हैं। इसलिये इसे **'कंपोजिट मीडिया'** यानी समग्र मीडिया नाम भी दिया गया है। इसमें वेबसाइट, ऑडियो–वीडियो स्ट्रीमिंग, चैटिंग, ऑनलाइन कम्युनिटीज के साथ तकनीक–ऑडियो–वीडियो–ग्राफिक के मेल से तैयार की गयी सभी तरह की सामग्री भी शामिल हैं। लेकिन पत्रकारिता के संदर्भ में न्यू मीडिया का मतलब ब्लॉगिंग, सिटिजन जर्नलिज्म, सोशल नेटवर्किंग और वायरल मार्केटिंग यानी समाचार पत्रों के ई–पेपर, न्यूज पोर्टल, वेब पोर्टल, ब्लॉग एवं कुछ हद तक मौजूदा पत्रकारिता की मदद के साथ ही उसके लिये चुनौती बन रहे सोशल मीडिया तक सीमित माना जा सकता है। नये मीडिया के जरिये पाठक तक खबर–सूचनाएं लिखे हुए टेक्स्ट, सुनाई देने वाली आवाज, दिखने वाले ऑडियो – विजुअल व इंफोग्राफ यानी परंपरागत मीडिया के सभी प्रारूपों में पहुंचाई जा सकती हैं। यानी जिस भी आसान तरीके से पाठक उसे समझ सके।

वहीं न्यू मीडिया के क्षेत्र में जाने पहचाने नाम बालेन्दु शर्मा दाधीच के शब्दों में ''यूं तो दो–ढाई दशक की जीवनयात्रा के बाद शायद 'न्यू मीडिया' का नाम 'न्यू मीडिया' नहीं रह जाना चाहिए क्योंकि वह सुपरिचित, सुप्रचलित और परिपक्व सेक्टर का रूप ले चुका है। लेकिन शायद वह हमेशा 'न्यू मीडिया' ही बना रहे क्योंकि पुरानापन उसकी प्रवृत्ति ही नहीं है। वह जेट युग की रफ्तार के अनुरूप अचंभित कर देने वाली तेजी के साथ निरंतर विकसित भी हो रहा है और नए पहलुओं, नए स्वरूपों, नए माध्यमों, नए प्रयोगों और नई अभिव्यक्तियों से संपन्न भी होता जा रहा है। वास्तव में न्यू मीडिया की परिभाषा पारंपरिक मीडिया की तर्ज पर दी ही नहीं जा सकती। न्यू मीडिया समाचारों, लेखों, सृजनात्मक लेखन या पत्रकारिता तथा समाचार पत्रों की वेबसाइटों और पोर्टल न्यू मीडिया के दायरे तक ही सीमित नहीं है, बल्कि नौकरी ढूंढने वाली वेबसाइटें, रिश्ते तलाशने वाले पोर्टल, ब्लॉग, स्ट्रीमिंग ऑडियो–वीडियो, ईमेल, चैटिंग, इंटरनेट–फोन, इंटरनेट पर होने वाली खरीददारी, नीलामी, फिल्मों की सीडी–डीवीडी, डिजिटल कैमरे से लिए फोटोग्राफ, इंटरनेट सर्वेक्षण, इंटरनेट आधारित चर्चा के मंच, दोस्त बनाने वाली वेबसाइटें और सॉफ्टवेयर तक न्यू मीडिया का हिस्सा हैं। लेकिन पत्रकारिता के संदर्भ में न्यू मीडिया का अर्थ इंटरनेट के जरिए होने वाली पत्रकारिता से ही लगाया जाता है।''[4]

नये मीडिया पर हिंदी साहित्य :

भाषाओं का जीवन उनके तकनीकी अनुकूलन पर निर्भर करता है, यानी यदि भाषाएं तत्कालीन देश, काल व परिस्थितियों और बदलती तकनीकी के दौर में उस दौर की तकनीकी में स्वयं को समाहित कर

---

[3] न्यू मीडिया 'कंपोजिट मीडिया' है : देवेश देवेन्द्र कुमार, न्यू मीडिया, विकीपीडिया @ https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E2%80%8D%E0%A4%AF%E0%A5%82_%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%A1%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE देखा 4 अगस्त 2017।

[4] जैन डा. चंद्रकुमार, न्यू मीडिया बनाम पत्रकारिता का नया लोकतंत्र, रचनाकार @ http://www.rachanakar.org/2015/05/blog-post_80.html देखा 9 अगस्त 2017।

पाती हैं, तो ही वे दीर्घजीवी हो पाती हैं। भाषा के अभाव में साहित्य और संस्कृति का निर्माण असंभव है। दुनिया की विभिन्न भाषाएं इस चुनौती से लगातार गुजरी हैं और जो इसमें पिछड़ गयीं वे लुप्तप्राय हो गयी हैं। हिंदी भी ऐसी ही चुनौती से गुजरती रही है। देश की राष्ट्रभाषा हिंदी का आधुनिक रूप कई पड़ावों से होता हुआ अपने वर्तमान स्वरूप तक विकसित हुआ है। संस्कृत और अपभ्रंश की राह तय करती हुई हिंदी ने वर्ष 1000 ईसवी के आसपास अपना आरंभिक पुरानी हिंदी का स्वरूप ग्रहण किया। आगे वह मौखिक परंपराओं से गुजरती हुई विभिन्न बोलियों में प्रस्फुटित हुई, और लंबे समय तक वाचिक परंपरा में रही। भारत में 1780 में 'हिकीज बंगाल गजट' के साथ पत्रकारिता के पदार्पण और आगे 1826 में हिंदी के पहले समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' के प्रकाशन के साथ भारतेंदु हरिश्चंद व उनके दौर के आरंभिक हिंदी साहित्यकारों ने अपने लेखन से हिंदी की वाचिक परंपरा को छापेखानों में कागज पर छपी पत्र–पत्रिकाओं व पुस्तकों के जरिये शब्दों की पाठकीय परंपरा में तब्दील कर हिंदी को नवजीवन देने जैसा कार्य किया। इस तरह हिंदी को भी अपने प्रसार के लिये छापेखाने का एक नया मीडिया यानी माध्यम मिला। आगे आधुनिक काल में छापेखानों तथा मुद्रण तकनीकों के उन्नत होने के साथ हिंदी के गद्य व पद्य रूप विभिन्न साहित्यिक विधाओं की पुस्तकों व पत्र–पत्रिकाओं में समाहित हुए।

लेकिन 1983 में डॉस आधारित हिंदी शब्द संसाधक अक्षर, शब्दरत्न तथा भारतीय भाषाओं के लिये 'इस्की' मानक जारी होने के साथ[5] हिंदी के लिये कम्प्यूटर के द्वार खुले और वह पुस्तकों से उस दौर के कम्प्यूटरों की स्क्रीन पर भी नजर आने लगी। अलबत्ता, तब वह आज की तरह अधिक चलायमान नहीं थी। आगे वर्ष 1991 में देवनागरी सहित नौ भारतीय लिपियों और 21वीं सदी के वर्ष 2000 में पदार्पण के साथ वह यूनिकोड हिंदी और विभिन्न फॉट परिवर्तकों के आने के साथ हिंदी स्वयं को इंटरनेट पर समाहित करती चली गयी। इस कोशिश में उसने अपने कई शब्दों पर लगने वाले 'अनुस्वारों–चंद्र बिंदुओं' को केवल 'बिंदी' में सिमटा लिया है। साथ ही वह स्मार्टफोन के साथ ही किंडल व ई–रीडर जैसे अत्याधुनिक उपकरणों के जरिये भी स्वयं को निरंतर इंटरनेट और आभासी संसार पर अपनी उपस्थिति कायम कर रही है। वहीं गूगल, फेसबुक, ट्विटर, याहू, फायरफॉक्स के साथ ही मोबाइल–स्मार्टफोन, टेबलेट आदि हिंदी में काम करने लगे हैं। विकीपीडिया के हिंदी संस्करण पर लाखों लेख उपलब्ध हो गये हैं। अमेजॉन ने अपने ई–बुक्स प्लेटफॉर्म किंडल पर हजारों हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकें उपलब्ध करा दी हैं। फेसबुक ने अपने एंड्राइड एप्लिकेशन में ट्रांसलिटरेशन आधारित हिंदी टाइपिंग की सुविधा उपलब्ध करा दी है। डेस्कटॉप पब्लिशिंग सॉफ्टवेयर स्क्राइब्स और टच स्क्रीन युक्त स्मार्टफोन, लेपटॉप, जीमेल आदि कमोबेश सभी माध्यमों पर हिंदी टाइपिंग व फॉन्ट परिवर्तन तथा गूगल ट्रांसलेटर सहित सभी प्रमुख जरूरत की सुविधाएं उपलब्ध हो गयी हैं। हिंदी की वेबसाइटों को विज्ञापन भी उपलब्ध होने लगे हैं।

वैसे तो अनेक वेबसाइट समग्र रूप में हिंदी में मौजूद हैं, परंतु हिंदी का मौलिक लेखन, पत्रकारीय लेखन और साहित्य लेखन भी आभासी संसार में उपस्थित हो रहा है। अब हिंदी व उसकी सहोदरी लोकभाषाओं के अनेक बुजुर्ग साहित्यकार भी सीधे कम्प्यूटर पर साहित्य रचने लगे हैं तो पुराने साहित्य के साथ ही जीर्ण–शीर्ण हिंदी की सामग्री के डिजटलीकरण की प्रक्रिया भी जोरों पर है। देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में चल रही 'डिजिटल इंडिया' की बयार के साथ देश भर के अनेक पुस्तकालयों के डिजिटलीकरण की भी अनेक परियोजनाएं चल रही हैं। साहित्य के साथ–साथ हिंदी में ब्लॉग लेखक भी विपुल मात्रा में हिंदी की सामग्री परोस रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान में देश में 15 करोड़ ब्लॉग हैं, जिनमें हिंदी के ब्लॉगों का हिस्सा ही बड़ा है। ब्लॉगिंग से हिंदी–इंग्लिश युक्त 'हिंग्लिश' के साथ ही साहित्यिक हिंदी भी निरंतर इंटरनेट पर आरूढ़ हो रही है। इसमें दृश्य–श्रव्य सामग्री कुछ कम परंतु टेक्स्ट के स्तर पर प्रचुरता है। विकीपीडिया, कविताकोश, गद्यकोश और वेबदुनिया जैसे पोर्टल हिंदी साहित्य की प्रचुर सामग्री को इंटरनेट पर लाने की दिशा में सक्रिय हैं। हिंदी ब्लॉगर केवल भारत की सीमा तक ही सीमित नहीं हैं, वरन भारत के बाहर भी सक्रिय ब्लॉगरों की अच्छी संख्या है। इंटरनेट पर मल्टीमीडिया से संबंधित हिंदी की पॉडकास्ट, चित्र

---

[5] विकीपीडिया @ https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%80_%E0%A4%95%E0%A4%AE%E0%A5%8D%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A5%82%E0%A4%9F%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%97_%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%87%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B8 देखा 9 अगस्त 2017।

और दृश्य–श्रव्य सामग्री ज्ञान, सूचना और मनोरंजन संबंधी सामग्री का आगम इंटरनेट पर बढ़ता जा रहा है। साथ ही अब तक संकुचित भूगोल में सिमटी बैठी हरियाणवी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, छत्तीसगढ़ी, कुमाउनी, गढ़वाली, राजस्थानी आदि क्षेत्रीय भाषाएं भी अपने साहित्य, संगीत और सांस्कृतिक दृश्यों के साथ आभासी संसार में आकर अपना विस्तार कर रही हैं। इस प्रकार हिंदी की बोलियों और उपभाषाओं का भी नये मीडिया पर पुनर्उद्धार हो रहा है।[6]

पुस्तक प्रकाशन के साथ बढ़ रहा है ऑनलाइन कागज रहित पुस्तक प्रकाशन :

देश के लोगों में पठनीयता के चिंताजनक स्थिति तक ह्रास होने की हर ओर दिख रही चिंताओं के बावजूद अभी भी अनेक लोग आशान्वित हैं कि कागज रहित नये मीडिया पर सुविधा के बावजूद देश में पुस्तकों की अहमियत आगे भी बनी रहेगी। बल्कि यह भी कहा जा रहा है कि पुस्तकालयों या लेखकों की अलमारियों में दीमकों की भेंट चढ़ रही पुस्तकों को नया जीवन मिल गया है। वे सीधे पाठकों की आंखों के सामने व अंगुलियों की पहुंच में आ गयी हैं।

देश के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने वर्ष 2014 में दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित 22वें विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन करते हुए पुस्तकों की उपयोगिता पर कहा था कि **'देश में ज्ञान की भूख अधिक है और इंटरनेट के युग में भी किताबों की अहमियत बनी रहेगी, क्योंकि किताबें पढ़ने की आदत हमारी सभ्यता में निहित है।'** यह सच्चाई भी है कि पुस्तकें देश वासियों के संस्कारों से जुड़ी रही हैं। महात्मा गाँधी को महान बनाने में गीता, टालस्टाय और थोरो का महत्वपूर्ण योगदान बताया जाता है। देश की आजादी के संग्राम में भी पुस्तकों की बड़ी व महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त की 'भारत–भारती पढ़कर कितने ही नौजवानों ने आजादी के आंदोलन में भाग लिया था। ये ही संस्कार भारत की आज की पीढ़ियों में भी गहरे तक मौजूद हैं। बावजूद आज वैश्विक हवा के प्रभाव में यहां के पुस्तक प्रकाशक अपनी पुस्तकों के मुद्रित संस्करणों के साथ उनके ई–संस्करण, ई–बुक रीडर के साथ ही किंडल व आईपैड संस्करण भी उपलब्ध कराने लगे हैं।

उद्योग संगठन फिक्की तथा नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त अध्ययन के साथ ही बिजनेस स्टैंडर्ड की हालिया रिपोर्टों के अनुसार देश में पुस्तकों के प्रकाशन बाजार में करीब 20 प्रतिशत प्रति वर्ष की ही वृद्धि हो रही है। जबकि 'टाटा लिटरेचर लाइव सर्वे 2014' के भारतीय पाठकों की अभिरुचि की खोज से संबंधित आंकड़ों के अनुसार देश में ई–बुक पढ़ने वाले उत्तरदाताओं का औसत 23 प्रतिशत है। रिपोर्ट में उल्लेखनीय तथ्य है कि उम्र के लिहाज से युवाओं, अधेड़ों की अपेक्षा सर्वाधिक पठनीयता वाले 50 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्ग पाठक युवाओं की अपेक्षा मुद्रित पुस्तकों की जगह ई–बुक पढ़ने में अधिक रुचि रखते नजर आ रहे हैं। संभवतः इसलिए कि ई–बुक्स मुद्रित पुस्तकों के मुकाबले हल्की होने की वजह से उन्हें सुविधाजनक लगती है। साथ ही ई–बुक रीडर या किंडल आदि पर इसके प्रिंट को पढ़ने हेतु, सुविधानुसार बड़ा किया जा सकता है, और कठिन शब्दों के अर्थ तुरंत एक क्लिक से प्राप्त हो जाते हैं। अलग से डिक्शनरी देखने की आवश्यकता नहीं होती, तथा कम प्रकाश में भी इसे पढ़ने की सुविधा रहती है। यहां ज्ञान के किसी अंश को खोजने के लिये पुस्तकों के पन्ने पलटने की कठिनाई भी नहीं उठानी पड़ती। इसके साथ ही इंटरनेट ने दुनिया भर की पुस्तकों को हमारे हाथों में पहुंचा दिया है। इसी कारण पूरी दुनिया में ई–बुक्स की बिक्री मुद्रित पुस्तकों की बिक्री से आगे निकल गई है, और भारत में भी साहित्य से जुड़े दूसरी पीढ़ी के काफी मेट्रोवासियों, लेखकों ने भी पुस्तकें पढ़ने के लिये महंगे 'किंडल व रीडर' ले लिये हैं, और विश्व बाजार की देखा–देखी यहां के पुस्तक बाजार से जुड़ी प्रकाशन कंपनियां भी ई–बुक्स के बाजार में उतरने को एक तरह से मजबूर हो गयी हैं। 'बुकस्टैट्स प्रॉजेक्ट, यूएसए' की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में 2014 में विभिन्न प्रकाशकों ने कुल मिलाकर ई–बुक की करीब तीन अरब डॉलर की बिक्री की है। फ्लिपकार्ट भी भारत में अगले तीन–चार वर्षों में ई–बुक की बिक्री के कुल पुस्तकों की बिक्री के 25 प्रतिशत तक होने की उम्मीद जता रही है। यह जरूर है कि भारत में ई–बुक्स के फलने–फूलने के लिए लोगों के पास इन्हें पढ़ने के लिये सस्ते 'रीडिंग डिवाइस' होने

---

[6] द्विवेदी डॉ0 राम प्रकाश, नया मीडिया और हिंदी का बदलता परिप्रेक्ष्य, हिंदी मीडिया @ http://hindimedia.blogspot.in/2015/09/blog-post.html देखा 4 अगस्त 2017।

जरूरी हैं। जबकि बाजार में आईपैड और किंडल जैसे जो डिवाइस उपलब्ध हैं, उनकी भारत में कीमत मध्यम श्रेणी के लैपटॉप के बराबर है। फॉरमेट की भी समस्या है। ऐसा होता है कि कोई किताब एंड्रॉयड फोन पर डाउनलोड कर पढ़ी जा सकती है, परंतु किंडल या टैबलेट पर वह उपलब्ध नहीं होती हैं।

'बुकस्टैट्स प्रॉजेक्ट, यूएसए' की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में 2014 में विभिन्न प्रकाशकों ने कुल मिलाकर ई–बुक की करीब तीन अरब डॉलर की बिक्री की, जो कि 2012 की बिक्री के बराबर ही रही। यानी बिक्री में कोई खास परिवर्तन या बढ़ोत्तरी नहीं हुई है। जबकि भारत में किंडल ई–बुक रीडर का उत्पादन तथा बिक्री करने वाली सबसे बड़ी कंपनी अमेजॉन मानती है कि यहां अभी 'ई–बुक' का बाजार आरंभिक अवस्था में ही है, किंतु इसके भविष्य की अपार संभावनाएं हैं। वहीं फ्लिपकार्ट **भारत में अगले तीन–चार वर्षों में ई–बुक की बिक्री के कुल पुस्तकों की बिक्री के 25 प्रतिशत तक होने की उम्मीद जता रही है।**

नये मीडिया पर साहित्यकार अमृतलाल नागरः

भारत में नया मीडिया राष्ट्रभाषा हिंदी सहित भारतीय भाषाओं किस तेजी से व भीतर तक समाहित हो गया है, देश में इंटरनेट व नये मीडिया के 1994 में आने से पूर्व ही 1990 में दिवंगत हो चुके साहित्यकार अमृतलाल नागर का सागर सदृश विशाल व विस्तृत–विपुल हिंदी रचना संसार इसका प्रतिमान है। इंटरनेट पर गूगल जैसे किसी भी सर्च इंजन पर हिंदी साहित्य से संबंधित कुछ भी यथा – हिंदी साहित्य, हिंदी के प्रमुख साहित्यकार, बाल साहित्यकार, कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, व्यंग्यकार, सर्वेक्षणकार, अनुवादकार, संस्मरण लेखक, आत्मकथा लेखक, निबंधकार, ललित निबंधकार, संपादक के साथ ही पत्र लेखक व पुरस्कार प्राप्त लेखक जैसे कुछ भी 'टैग वर्ड्स' खोजे जायें, नागर जी का नाम कमोबेश हर बार सबसे पहले ही आ जाता है। निस्संदेह इसमें उनका नाम 'अ' शब्द से होने की भी कुछ भूमिका रहती है, परंतु हम जानते हैं कि केवल नाम का पहला अक्षर हिंदी में 'अ' अथवा अंग्रेजी में 'ए' से होने पर ही सर्च इंजन किसी नाम को सबसे पहले खोजकर नहीं देते, वरन यह इस बात पर अधिक निर्भर करता है कि किसी व्यक्ति या उससे संबंधित पाठ्य सामग्री को कितना अधिक बार इंटरनेट पर खोजा व पढ़ा जा रहा है। साथ ही खोजने वाला व्यक्ति सर्च इंजन द्वारा खोज कर उपलब्ध कराई गयी सामग्री पर कितने अधिक समय के लिये टिकता है। इस कसौटी पर भी खरा उतरने के कारण सही अर्थों में संपूर्ण साहित्यकार रहे अमृतलाल नागर जी का नाम इंटरनेट पर खोजने में सबसे पहले आ जाता है।

हिंदी साहित्य की अधिकांश विधाओं में पद्म भूषण सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त साहित्यकार अमृतलाल नागर का मजबूत दखल रहा है। नागर जी का 15 उपन्यास, 30 के करीब कहानियां, सात नाटक, दो यात्रावृत्त, 20 बाल साहित्य की रचनाएं, तीन विमर्श, पांच निबंध, आठ अनुवाद, तीन संस्मरण, दो आत्मकथ्य, कई सामाजिक सर्वेक्षण, संस्मरण, साहित्यिक एवं ललित निबंध, फिल्म, रंगमंच तथा रेडियो नाटक, डायरी तथा हास्य–व्यंग्य सहित बड़ा व्यक्तित्व व कृतित्व युक्त विषद लेखन भंडार रहा है, जो कि अब इंटरनेट पर विकीपीडिया[7] के साथ ही भारत डिस्कवरी डॉट कॉम[8], हिंदी समय[9], गद्यकोष[10], हिंदी मीडिया डॉट इन[11], शोधगंगा[12], हिंदी बुक्स पीडीएफ डॉट कॉम, रचनाकार[13], प्रवक्ता डॉट कॉम[14], आई नेक्स्ट जागरण डॉट कॉम,

---

[7] अमृतलाल नागर, विकीपीडिया @ https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2_%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A4%B0 देखा 3 अगस्त 2017।

[8] अमृतलाल नागर, भारतकोश @ http://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%85%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2_%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A4%B0 देखा 3 अगस्त 2017।

[9] अमृतलाल नागरः मैं लेखक कैसे बना, हिंदी समय @ http://www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=7134&pageno=1 देखा 3 अगस्त 2017।

[10] अमृतलाल नागर, गद्यकोष @ http://gadyakosh.org/gk/अमृतलाल_नागर

[11] अमृतलाल नागर के लेखक बनने की कहानी, हिंदी मीडिया डॉट कॉम @ http://hindimedia.in/%E0%A4%85%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2-%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A4%B0-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%B2%E0%A5%87%E0%A4%96%E0%A4%95-%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%A8%E0%A5%87/ देखा 3 अगस्त 2017।

[12] अमृतलाल नागर, शोधगंगा @ http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/47234/5/05_chapter%203.pdf देखा 3 अगस्त 2017।

बीबीसी डॉट कॉम[15], हिंदी वेब दुनिया[16], हिंदुस्तान[17], गूगल बुक्स[18], विश्ववार्ता[19], लावण्यम् अन्तर्मन[20] व भारतीय साहित्य संग्रह के साथ ही फेसबुक[21] सहित इंटरनेट पर अनेक वेबसाइटों में विस्तार से फैला हुआ है। उनकी लोकभारती प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तक अमृत और विष सहित कई पुस्तकें हिंदी बुक्स पीडीएफ[22] पर पीडीएफ फॉर्मेट में डाउनलोड पर मूल पुस्तक की तरह ही पढ़ी जा सकती है। इसके साथ ही उनकी 39 पुस्तकें भारतीय साहित्य संग्रह[23] पर उपलब्ध हैं। यहां से यह पुस्तकें उनकी समीक्षा–भूमिका आदि पढ़ने के उपरांत कीमत चुकाकर खरीदी भी जा सकती हैं। यथा कृपया दायें चलिये, महान युग निर्माता, महान विचारक व नटखट चाची के लिये 1.95 डॉलर, अक्ल बड़ी या भेंस के लिये 2.95 डॉलर, निंदिया आ जा 3.95 डॉलर, चक्रतीर्थ व सेठ बांकेमल के लिये 7.95 डॉलर, इसी पुस्तक के किंडल व आईपैड संस्करण 8.95 डॉलर, अमृत और विष तथा आंखों देखा गदर, सात घूंघट वाला मुखड़ा व नवाबी मसनद के लिये 9.95 डॉलर, भूख व हम फिदा ए लखनऊ के लिये 10.95 डॉलर, बिखरे तिनके व मेरी प्रिय कहानियां के लिये 11.95 डॉलर, 10 प्रतिनिधि कहानियां, महाभारत, सुहाग के नुपुर व अग्निगर्भा के लिये 12.95 डॉलर, चैतन्य महाप्रभु का सामान्य संस्करण 12.95 डॉलर तथा किंडल व आईपैड संस्करण 5.95 डॉलर, गदर के फूल 14.95 डॉलर, चकल्लस व टुकड़े टुकड़े दास्तान व शतरंज के मोहरे के लिये 15.95 डॉलर, नाच्यौ बहुत गोपाल 16.95 डॉलर, मानस का हंस के लिये 18.95 डॉलर, बूंद और समुद्र व ये कोठेवालियां 20.95 डॉलर, एकदा नैमिषारण्ये व करवट के लिये 21.95 डॉलर, पीढ़ियां 22.95 डॉलर तथा एक दिल हजार अफसाने के लिये 30.95 डॉलर कीमत रखी गयी है। वहीं गूगल प्ले पर ये कोठेवालियां के अलग–अलग संस्करण 123.90 व 247.80 रुपये में, मेरी कहानियां 279.54 में व अमृत और विष 324.50 रुपये में उपलब्ध हैं। साथ ही अमेजन डॉट कॉम[24] पर भी उनकी पुस्तकें मेरी प्रिय कहानियां (रुपये 65), सात घूंघट वाला मुखड़ा(रुपये 89–94), आंखों देखा गदर (रुपये 102–108), गदर के फूल (रुपये 133), अग्निगर्भा (रुपये 135), टुकड़े–टुकड़े दास्तान (रुपये 140–168) खंजन नयन (रुपये 160–189), अमृत और विष (रुपये 166), मानस के फूल (रुपये 207), करवट (रुपये 260–306), एक दिल हजार अफसाने (रुपये 285–450), भूख (रुपये 125–223), पीढ़ियां (रुपये 316–366) के साथ ही बूंद और समुद्र, सुहाग के नुपुर, एकदा नैमिषारण्ये तथा नाच्यौ बहुत गोपाल आदि रचनाएं बेहद कम दाम पर उपलब्ध हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

---

[13] अमृतलाल नागर का हास्य–व्यंग्य : सीता–हनुमान–संवाद तमिल में हुआ था या अंग्रेजी में, रचनाकार @ http://www.rachanakar.org/2011/07/blog-post_20.html देखा 4 अगस्त 2017।

[14] अमृतलाल नागर जन्म शताब्दी, प्रवक्ता डॉट कॉम @ http://www.pravakta.com/birth-centenary-of-amritlal-nagar/ देखा 3 अगस्त 2017।

[15] खांटी लखनवी थे अमृत लाल नागर @ http://www.bbc.com/hindi/india/2016/08/160822_amritlal_nagar_vivechana_pk देखा 4 अगस्त 2017 को।

[16] दो रचनात्मक दोस्तों की याद, हिंदी वेब दुनिया @ http://hindi.webdunia.com/madhya-pradesh/amrit-lal-nagar-balraj-sahni-116072100100_1.html देखा 4 अगस्त 2017।

[17] किस्सागोई के माहिर रचनाकार थे अमृतलाल नागर, हिंदुस्तान @ http://www.livehindustan.com/news/article/article1-story-355573.html देखा 4 अगस्त 2017।

[18] गूगल बुक्स @ https://books.google.co.in/books?id=11LcBQAAQBAJ&printsec=frontcover&dq=%E0%A4%85%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2+%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A4%B0&hl=hi&sa=X&ved=0ahUKEwievPHZ-rzVAhWFJ5QKHWI7CoQQ6AEIMTAC#v=onepage&q=%E0%A4%85%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2%20%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A4%B0&f=false देखा 4 अगस्त 2017 को।

[19] लेखन में अनुभव और यथार्थ के पर्याय अमृतलाल नागर, विश्ववार्ता @ http://www.vishwavarta.com/%E0%A4%B2%E0%A5%87%E0%A4%96%E0%A4%A8-%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%AD%E0%A4%B5-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%AF%E0%A4%A5%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5-%E0%A4%95/59551 देखा 4 अगस्त 2017 को।

[20] साहित्यकार अमृतलाल नागर जी, लावण्यम् अन्तर्मन @ http://www.lavanyashah.com/2014/08/blog-post.html देखा 4 अगस्त 2017 को।

[21] अमृतलाल नागर का रचना संसार, फेसबुक @ https://www.facebook.com/events/312090032510472?sw_fnr_id=3206834429&fnr_t=0 देखा 3 अगस्त 2017।

[22] हिंदी बुक्स पीडीएफ डॉट कॉम @ http://www.hindibookspdf.com/amrit-aur-vish-by-amrit-lal-nagar-hindi-book-pdf-free-download/ देखा 4 अगस्त 2017।

[23] अमृतलाल नागर, भारतीय साहित्य संग्रह @ http://www.pustak.org/index.php/books/authorbooks/Amritlal%20Nagar देखा 4 अगस्त 2017।

[24] अमेजन डॉट कॉम @ http://www.amazon.in/s/ref=nb_sb_ss_i_2_8?url=search-alias%3Dstripbooks&field-keywords=amritlal+nagar+books&sprefix=amritlal%2Cstripbooks%2C801&crid=1IP4642JAQA3G&rh=n%3A976389031%2Ck%3Aamritlal+nagar+books&ajr=1 देखा 4 अगस्त 2017।

अग्रवाल–2002, हैंडबुक ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन, कान्सेप्ट पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2002,

आई नेक्स्ट जागरण डॉट कॉम @ http://inextlive.jagran.com/

गद्यकोष @ http://gadyakosh.org

जैन डा. चंद्रकुमार, न्यू मीडिया बनाम पत्रकारिता का नया लोकतंत्र,

द्विवेदी डा. राम प्रकाश, नया मीडिया और हिंदी का बदलता परिप्रेक्ष्य।

नवीन समाचार, समाचार पोर्टल @ https://navinsamachar.wordpress.com/

प्रवक्ता डॉट कॉम @ www.pravakta.com

फेसबुक @ https://www.facebook.com/

भारत कोश @ http://bharatdiscovery.org/

भारतीय साहित्य संग्रह @ http://pustak.org/

रचनाकार @ http://www.rachanakar.org/

विकीपीडिया @ https://hi.wikipedia.org/

शोधगंगा @ http://shodhganga.inflibnet.ac.in/

हिंदी मीडिया @ http://hindimedia.blogspot.in/

हिंदी समय डॉट कॉम @ http://www.hindisamay.com/